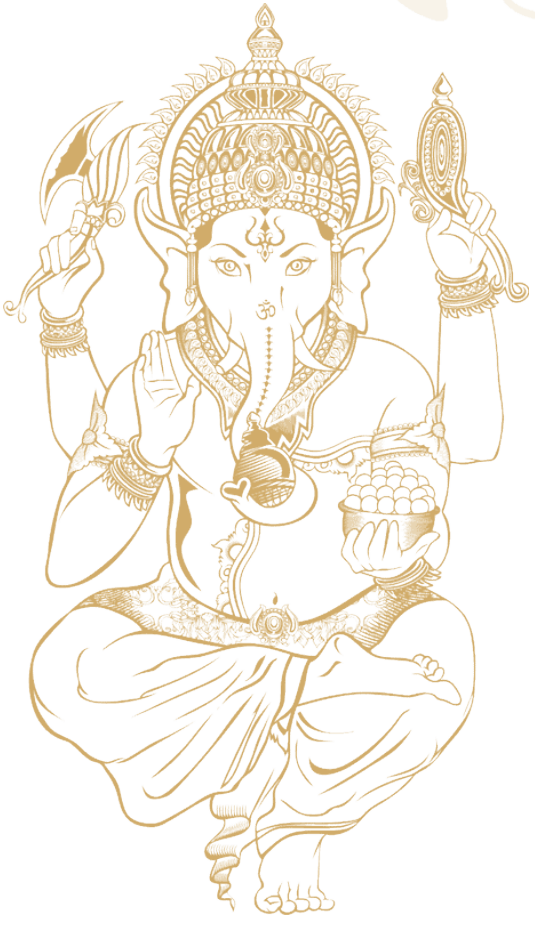

Shivam Sakuja

Himanshi Saluja

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121879001

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121879001 Date: 09/04/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
02/06/1997	जन्म तिथि	13/07/1999
सोमवार	दिन	मंगलवार
घंटे 13:56:00	जन्म समय	14:33:00 घंटे
घटी 21:20:59	जन्म समय(घटी)	22:32:46 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:23:36	सूर्योदय	05:31:53
19:14:49	सूर्यास्त	19:21:24
23:49:13	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:50

कन्या	लग्न	तुला
बुध	लग्न लग्नाधिपति	शुक्र
मेष	राशि	कर्क
मंगल	राशि-स्वामी	चन्द्र
अश्विनी	नक्षत्र	पुनर्वसु
केतु	नक्षत्र स्वामी	गुरु
4	चरण	4
शोभन	योग	हर्षण
तैतिल	करण	किंस्तुघ्न
ला-लाखन	जन्म नामाक्षर	ही-हिना
मिथुन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क
क्षत्रिय	वर्ण	विप्र
चतुष्पाद	वश्य	जलचर
अश्व	योनि	मार्जार
देव	गण	देव
आद्य	नाड़ी	आद्य
मृग	वर्ग	मेष

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 1वर्ष 4मा 19दि		10:12:06	कन्या	लग्न	तुला	22:52:33	गुरु 3वर्ष 5मा 0दि	
चन्द्र		18:01:20	वृष	सूर्य	मिथु	26:42:07	बुध	
21/10/2024		10:41:38	मेष	चंद्र	कर्क	00:29:06	12/12/2021	
21/10/2034		29:34:00	सिंह	मंगल	तुला	09:07:46	13/12/2038	
चन्द्र	21/08/2025	25:33:22	मेष	बुध व	कर्क	15:38:13	बुध	10/05/2024
मंगल	22/03/2026	28:01:35	मक	गुरु	मेष	08:17:51	केतु	07/05/2025
राहु	21/09/2027	03:56:35	मिथु	शुक्र	सिंह	06:32:45	शुक्र	07/03/2028
गुरु	20/01/2029	23:37:38	मीन	शनि	मेष	21:24:59	सूर्य	11/01/2029
शनि	21/08/2030	01:57:35	कन्या व	राहु व	कर्क	19:09:30	चन्द्र	13/06/2030
बुध	21/01/2032	01:57:35	मीन व	केतु व	मक	19:09:30	मंगल	10/06/2031
केतु	21/08/2032	14:41:23	मक व	हर्ष व	मक	21:56:18	राहु	27/12/2033
शुक्र	22/04/2034	05:52:53	मक व	नेप व	मक	09:28:40	गुरु	03/04/2036
सूर्य	21/10/2034	10:11:37	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	14:14:21	शनि	13/12/2038

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:49:13 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:50

लग्न-चलित

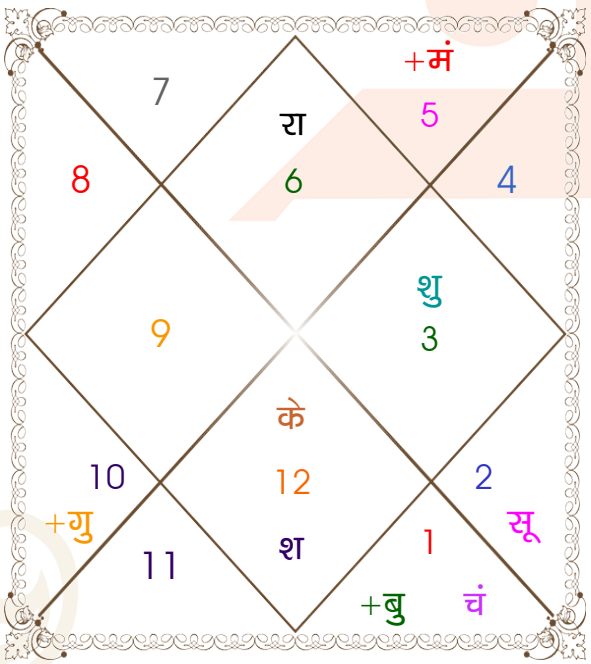

लग्न-चलित

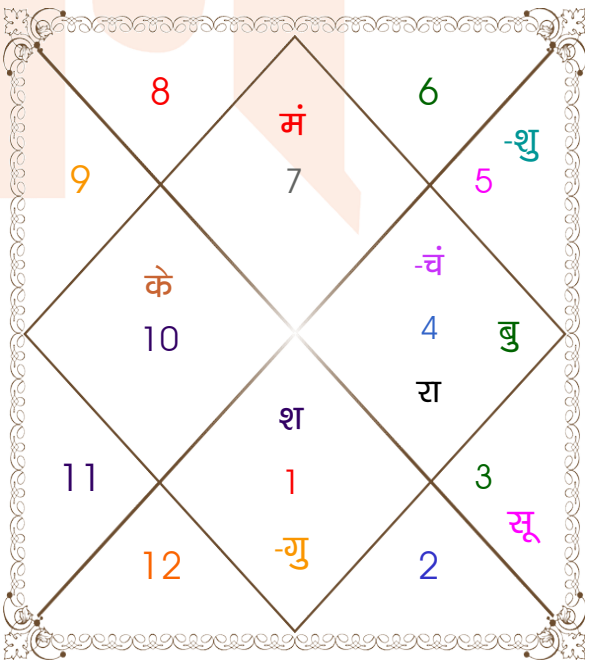

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	अश्व	मार्जार	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	कर्क	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.50		

कुल : **21.5 / 36**

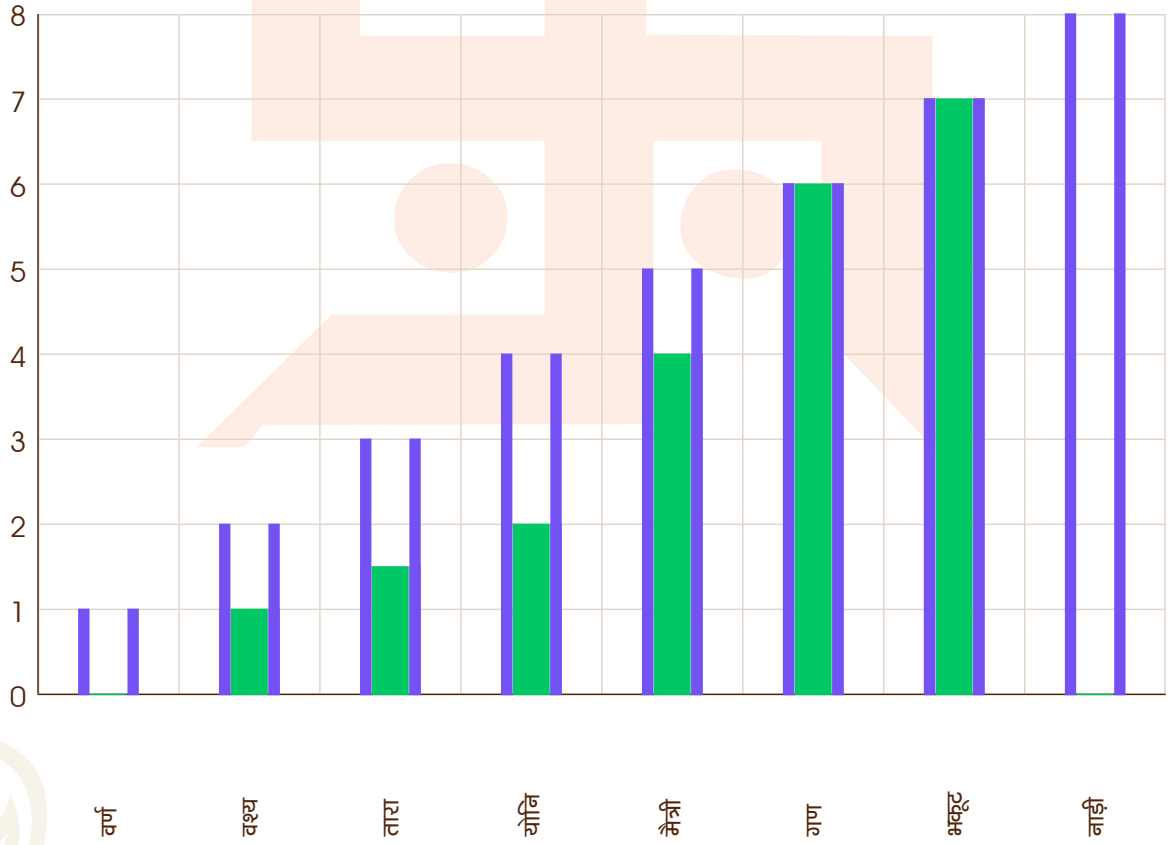

अष्टकूट मिलान

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

ौपअंउौानरं का वर्ग मृग है तथा भ्पउंदीपौसनरं का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसारौपअंउौानरं और भ्पउंदीपौसनरं का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

ौपअंउौानरं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

भ्पउंदीपौसनरं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहुौपअंउौानरं कि कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ौपअंउौानरं तथा भ्पउंदीपौसनरं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

ैपअंउ ैानरं का वर्ण क्षत्रिय तथा भ्पउंदीप ैसनरं का वर्ण ब्राह्मण है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण दोनों के बीच सदैव अहं का टकराव होता रहेगा। साथ ही भ्पउंदीप ैसनरं हमेशा श्रेष्ठता मनोग्रंथि से ग्रस्त रहेंगी तथा स्वयं को अपने पति से हमेशा अधिक बुद्धिमान एवं चतुर समझेंगी। श्रेष्ठता की यही भावना ैपअंउ ैानरं एवं बच्चों के विकास में बाधक साबित हो सकती है।

वश्य

ैपअंउ ैानरं का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है एवं भ्पउंदीप ैसनरं का वश्य जलचर है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। पशु एवं जलचर दोनों का साथ-साथ प्रकृति में सह अस्तित्व होता है। इसलिये दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार एवं पसंद/नापसंद अलग-अलग होंगे। जिसके फलस्वरूप दोनों शायद ही कभी एक-दूसरे को नुकसान पहुंचायेंगे। ैपअंउ ैानरं एवं भ्पउंदीप ैसनरं दोनों अपने-अपने अलग कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व निभाते रहेंगे। इस मिलान में ैपअंउ ैानरं एवं भ्पउंदीप ैसनरं दोनों एक-साथ प्रेमपूर्वक अपने कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व का निर्वहन करते रहेंगे।

तारा

ैपअंउ ैानरं की तारा क्षेम तथा भ्पउंदीप ैसनरं की तारा वध है। भ्पउंदीप ैसनरं की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसे में यह विवाह ैपअंउ ैानरं एवं भ्पउंदीप ैसनरं दोनों के लिए दुर्भाग्य के द्वार खोल सकता है। भ्पउंदीप ैसनरं अपने पति एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्यशाली साबित हो सकती है। अतः संभव है कि घर में निरंतर दुःखदायी घटनाओं का क्रम चलता रहे। जिससे घर में दुःख एवं पीड़ा के वातावरण का निर्माण हो सकता है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी काफी कष्ट भुगत सकते हैं तथा सफलता प्राप्ति के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है।

योनि

ैपअंउ ैानरं की योनि अश्व है तथा भ्पउंदीप ैसनरं की योनि मार्जार है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है।

बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ैपअंउ ैनरं का राशि स्वामी भ्पउंदीप ैसनरं के राशि स्वामी से मित्र का संबंध रखता है। जबकि भ्पउंदीप ैसनरं का राशि स्वामी ैपअंउ ैनरं के राशि स्वामी के साथ सम का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी के राशि स्वामी दूसरे साथी के लिए मित्र हो किंतु दूसरे साथी के राशि स्वामी अपने साथी के राशि स्वामी को सम मानते हों तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक सुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवं समृद्धि से युक्त जीवन होता है। अतः दम्पत्ति के बीच पारस्परिक समझ, विश्वास एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनों अपने घरेलू अथवा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन साथ मिलकर करते रहेंगे तथा सभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

गण

ैपअंउ ैनरं का गण देव तथा भ्पउंदीप ैसनरं का गण भी देव है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाववश दोनों दयालु, सहृदय, मृदु, सौम्य एवं संवेदनशील स्वभाव के होंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के अति अनुकूल होंगे तथा एक-दूसरे का काफी ख्याल रखने वाले होंगे। ऐसी स्थिति में वैवाहिक संबंध के उपरांत शांति, सुख, खुशहाली एवं समृद्धि हमेशा कदम चूमती रहेगी।

भकूट

ैपअंउ ैनरं से भ्पउंदीप ैसनरं की राशि चतुर्थ भाव में स्थित है तथा भ्पउंदीप ैसनरं से ैपअंउ ैनरं की राशि दशम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण ैपअंउ ैनरं परिश्रमी एवं अपने व्यवसाय में काफी अच्छे होंगे। अपने व्यवसाय में लगन, निष्ठा एवं मेहनत के कारण उन्हें सभी से प्रशंसा प्राप्त होती रहेगी। दूसरी ओर भ्पउंदीप ैसनरं घरेलू होंगी। अपने आतिथ्य भाव एवं सब का ध्यान रखने तथा बड़ों को

सम्मान देने की प्रवृत्ति कारण परिवार के सदस्यों की आंखों का तारा होंगी। पति-पत्नी के बीच असीम प्रेम, सहयोग एवं सामंजस्य बना रहेगा।

नाड़ी

ैापअंउ ैानरं की नाड़ी आद्य है तथा भ्पउंदीप ैसनरं की नाड़ी भी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ैापअंउ ैानरं एवं भ्पउंदीप ैसनरं दोनों की आद्य नाड़ी होने से, दम्पत्ति वात से संबंधित बीमारियों एवं रोगों के शिकार हो सकते हैं। ज्योतिषीय दृष्टि से ऐसे दम्पत्ति जिनकी नाड़ी एक ही हों, उनकी संतानें रक्ताल्पता, रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी का शिकार हो सकते हैं। वे पढ़ाई एवं कार्य में संकेन्द्रण की कमी जैसी व्याधियों एवं परेशानियों के शिकार हो सकते हैं अथवा बचपन या किशोरावस्था में ही उनकी मृत्यु हो सकती है।

मेलापक फलित

स्वभाव

ौपअंउौानरं की जन्मराशि मेष तथा भ्पउंदीपौसनरं की जन्मराशि कर्क है। कर्क राशि जलतत्व एवं मेषराशि अग्नितत्व युक्त है तथा अग्नि एवं जल के मध्य नैसर्गिक रूप से असमता का भाव अधिक होता है। अतः आप दोनों के मध्य असमानताएं अधिक रहेंगी। साथ हीौपअंउौानरं और भ्पउंदीपौसनरं में परस्पर भय का वातावरण रहेगा परन्तु समयानुकूल सम्मान के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। यही सम्मान एवं समानता का भाव इनको मधुर क्षण उपलब्ध कराएगा।

ौपअंउौानरं और भ्पउंदीपौसनरं के राशि स्वामियों की स्थिति परस्पर मित्र है। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह स्थिति शुभ रहेगी। यद्यपि भ्पउंदीपौसनरं बाहयरूप से मृदु एवं कोमल होगी परन्तु आंतरिक मन से वह सुदृढ रहेंगी तथा भावनाओं से लड़ने में सफल होगी तथा अपने प्रेमी के लिए बड़ा से बड़ा त्याग करने के लिए तत्पर रहेगी परन्तुौपअंउौानरं एक व्यावहारिक व्यक्ति होने के कारण उनकी इन भावनाओं को विशेष महत्व नही देंगे लेकिन भ्पउंदीपौसनरं उनके स्वार्थ एवं बचपने को समझकर उनसे सामंजस्य स्थापित करने मे समर्थ रहेंगी।

ौपअंउौानरं और भ्पउंदीपौसनरं की राशियां परस्पर 4-10 भाव में पड़ती हैं। यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से इनका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा तथा आर्थिक एवं भौतिक रूप से भी सम्पन्न रहेंगे। यद्यपिौपअंउौानरं की प्रवृति निराशावादी रहेगी परन्तु भ्पउंदीपौसनरं अपने प्रबल आशावाद से अप्रिय क्षणों को दूर करके किंचित सुखद क्षणों की प्राप्ति करने में समर्थ रहेंगी।

ौपअंउौानरं का वश्य चतुष्पाद तथा भ्पउंदीपौसनरं का वश्य जलचर है। इसके प्रभाव से इनका दाम्पत्य जीवन आदर्श एवं उत्साह से पूर्ण रहेगा तथाौपअंउौानरं , भ्पउंदीपौसनरं की कामभावनाओं का आदर करते हुए उन्हें पूर्ण रूप से प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

भ्पउंदीपौसनरं का वर्ण ब्राहमण तथाौपअंउौानरं का वर्ण क्षत्रिय है। अतः इनकी कार्य क्षमताओं एवं क्षेत्रों में भिन्नता रहेगी।ौपअंउौानरं जहाँ उत्साही पराक्रमी एवं साहसी कार्यो को करने मे रूचिशील रहेंगे वहां भ्पउंदीपौसनरं अध्ययन अध्यापन शास्त्रीय या अन्य सत्कार्यो को करने में रूचिशील होंगी परन्तु इससे दाम्पत्य जीवन की शुभता पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

धन

ौपअंउौानरं और भ्पउंदीपौसनरं की तारा सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। इन पर भकूट का प्रभाव भी सम ही होगा लेकिनौपअंउौानरं पर मंगल का अशुभ

प्रभाव रहेगा जिसके प्रभाव से समय समय पर आर्थिक उतार चढ़ाव का सामना कर सकते है। साथ ही लाभ एवं आय स्रोतों में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे।

इसके अतिरिक्त ौपअंउैानरं की प्रवृति अनावश्यक रूप से व्यय करने की भी होगी जिसका आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अतः उन्हें चाहिए कि अनावश्यक व्यय की इस प्रवृति पर नियंत्रण रखें तभी उनकी आर्थिक स्थिति अनुकूल रह सकती है।

स्वास्थ्य

ौपअंउैानरं और भ्पउंदीपैंसनरं दोनों एक ही नाड़ी में उत्पन्न हुए है। अतः इन पर नाड़ी दोष का प्रभाव रहेगा जिससे इनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। इसके प्रभाव से दम्पति धातु या गुप्त रोगों से परेशानी की अुभूति करेंगे तथा भ्पउंदीपैंसनरं भी रक्त या पित कष्टों को प्राप्त करेंगी। साथ ही मंगल के प्रभाव से भीौपअंउैानरं हृदय रोग संबंधी कष्ट प्राप्त करेंगे तथा यदा कदा संभोग शक्ति की शिथिलता की भी अनुभूति कर सकते है। इससे दाम्पत्य जीवन में अशांति का वातावरण होगा। अतः दोनों को अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए तथा उपरोक्त दुष्प्रभावों की शांति के लिए हनुमानजी की उपासना एवं मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि सेौपअंउैानरं और भ्पउंदीपैंसनरं का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्तौपअंउैानरं और भ्पउंदीपैंसनरं के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में भ्पउंदीपैंसनरं के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन भ्पउंदीपैंसनरं को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में भ्पउंदीपैंसनरं को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष सेौपअंउैानरं और भ्पउंदीपैंसनरं सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकारौपअंउैानरं और भ्पउंदीपैंसनरं का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

भ्पउंदीप ैसनरं के अपने सास से सामान्यतया अच्छे संबध रहेंगे तथा सास भी उसके विनम्र स्वभाव, मधुरवाणी तथा गृहणी के रूप में उससे पूर्ण प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगी। भ्पउंदीप ैसनरं भी अपनी सास को माता के समान व्यवहार एवं सम्मान प्रदान करेंगी तथा किसी भी गम्भीर समस्या का परस्पर सामंजस्य से समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

साथ ही उसके ससुर भी उनकी सेवा तथा आदर के भाव से प्रसन्न रहेंगे तथा भ्पउंदीप ैसनरं भी अपनी ओर से उनकी सेवा सुश्रूषा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से उन्हें यथोचित सम्मान तथा सहयोग नहीं मिलेगा तथा इनकी प्रतिद्वन्दिता का भाव परस्पर दूरी बनाए रखेगा।

इसके अतिरिक्त सास ससुर का भ्पउंदीप ैसनरं को ससुराल में पूर्ण स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा वे सच्चे मन से उसे अपने परिवार में स्वीकार करेंगे।

ससुराल-श्री

ैपअंउ ैानरं तथा उनकी सास के संबधों में सामान्यतया मधुरता ही रहेगी। साथ ही आपस में किसी प्रकार के मतभेद या तनाव के भाव की न्यूनता रहेगी। वे अपनी सास के प्रति श्रद्धा तथा सम्मानजनक व्यवहार रखेंगे तथा उन्हें अपनी माता के समान ही आदर प्रदान करेंगे। साथ ही सपत्नीक वह समय समय पर ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में ैपअंउ ैानरं के संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा आयु में पर्याप्त अंतर के कारण दोनों के मध्य काफी वैचारिक विभिन्नता तथा अन्य मतभेद रहेंगे परन्तु यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन किया जाय तो इनमें न्यूनता आ सकती है। साथ ही साले एवं सालियों से ैपअंउ ैानरं के संबध अच्छे रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग, स्नेह तथा सहानुभूति प्राप्त होगी एवं परस्पर मित्रता का भाव रहेगा। इस प्रकार ससुराल के पक्ष का दृष्टिकोण ैपअंउ ैानरं के प्रति उत्साहवर्द्धक नहीं रहेगा तथा सामंजस्य से ही इसमें अनुकूलता वनी रहेगी।